खण्ड-13, अंक-1, वर्ष-2025, मु0प्र0 82-85
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v13i1.13
SJIF (2025) : 8.749

समीक्षा आलेख

Care Education in the Context of National Education Policy 2020

Rashmi Tripathi and Manjul Trivedi
Department of Education, B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226 001, UP, India
rashmi.tripathi84@gmail.com, manjultrivedi.007@gmail.com

Received: 17-09-2025, Accepted: 20-11-2025

Abstract- Care Education is a new concept in educational word which is proposed by Nell Nodings. It is based on moral theory of care ethics which helps in character building of the child it helps to develop all the three domains (cognitive, effective and psychomotor) of personality, means it focuses on holistic development of the child which is the ultimate aim of education. The fundamental principles of NEP 2020 also focus on Care Education like identify or acceptance the specific capabilities of the child, flexibility of curriculam, development of human or ethical values, life skills and education as the Public Service. This research paper deals with the studies about Care Education in context to NEP 2020 part 1- ECCE and suggest some measures to develop social, emotional,& ethical values among children from the very early age.

Key words- Care Education, ECCE, and NEP 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में देखभाल की शिक्षा

रश्मि त्रिपाठी एवं मंजुल त्रिवेदी
शिक्षाशास्त्र विभाग, बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ–226 001, उ0प्र0, भारत
rashmi.tripathi84@gmail.com, manjultrivedi.007@gmail.com

सार– देखभाल की शिक्षा शिक्षा जगत के लिए एक नया विचार है जिसे नेल नोडिंग्स ने प्रतिपादित किया है। देखभाल की शिक्षा नैतिक सिद्धांतों के देखभाल की नैतिकता सिद्धांत पर आधारित है। यह बालक के चारित्रिक विकास में सहायक है क्योंकि देखभाल की शिक्षा में व्यक्तित्व के तीनों पक्ष (ज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक) सक्रिय होते हैं। यह शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के जो आधारभूत सिद्धांत है देखभाल की शिक्षा भी उन्हीं पर काम करती है जैसे– प्रत्येक बालक की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना, पाठ्यक्रम का लचीलापन, नैतिकता व मानवीय मूल्यों का विकास, जीवन कौशल तथा शिक्षा को एक सार्वजनिक सेवा समझना। प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग–1 स्कूली शिक्षा (ईसीसीई) के संदर्भ में देखभाल की शिक्षा का अध्ययन किया गया है व कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए जो प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही छात्र में सामाजिक–भावनात्मक–नैतिक विकास में सहायक होंगे।

बीज शब्द– देखभाल की शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ईसीसीई

1. **प्रस्तावना–** नई शिक्षा नीति 2020 के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित पहली ऐसी शिक्षा नीति है जो शिक्षा के भारतीयकरण पर बल देती है, साथ ही भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य के लिये मार्ग भी प्रशस्त करती है। इसके 5 आधारभूत सिद्धांत हैं–पहुँच (Access), समानता (Equity), गुणवत्ता (Quality) सामर्थ्य (Affordability), और जवाबदेही (Accountability) (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020[1]) शिक्षा को सब तक समान रूप से पहुँचाने का लक्ष्य भारतीय ज्ञान परम्परा का द्योतक है। भारतीय ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानता है। देखभाल की शिक्षा का भी यही आधार है कि देखभाल की भावना सभी के लिए समान रुप से होनी चाहिए चाहे कोई हमारा संबंधी हो या न हो। आज के तकनीकी युग व वर्तमान शिक्षा ने हमें सब कुछ दिया है किंतु कहीं न कहीं हमारा सांस्कृतिक व नैतिक पतन भी किया है। जिस कारण आज का युवा आर्थिक रुप से सफल होने पर भी भावनात्मक व नैतिक निर्णय नही ले पाता और आत्महत्या जैसे कदम उठाते है। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है कि वह बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों का संतुलित विकास करे। देखभाल की शिक्षा इसमें एक अहम भूमिका निभा सकती है। बाल्यकाल में बच्चों को जो सिखाया जाता है वह युवावस्था में परिपक्व होकर सामने आता है अतः आज की शिक्षा के एक अंश के रूप में देखभाल की शिक्षा को भी पाठ्यक्रम (ईसीसीई) में स्थान दिया जाना चाहिये।

2. **संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण–** अधिकारी, सह और सेन[6] ने अपने अध्ययन में बताया की देखभाल ही नैतिकता का आधार है नोड्डिंग्स जो एक संबंध पारक और समग्र शिक्षा के लिए करुणा पैदा करने वाली शिक्षा की बात करती हैं उसके द्वारा यह बताना चाहती हैं कि देख भाल पाने वाला देखभाल करना भी सीखे ब्रोस्ट्रांम[7] ने अपने लेख "केयर एंड एजुकेशन टुवर्ड्स ए न्यू पैराडाइज इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन" में बताया है कि डेनमार्क की प्राथमिक शिक्षा देखभाल से बहुत संबंधित है उन्होंने इस पत्र में बच्चों के कल्याण के माध्यम के रूप में देखभाल तथा बच्चों के सीखने के माध्यम के रूप में शिक्षक के बीच संबंध का अध्ययन किया और बताया कि यह गलत अवधारणा है

बल्कि देखभाल और बच्चों के कल्याण सीखने और विकास के लिए प्रारंभिक बिंदु है। "देखभाल नैतिकता और नैतिक शिक्षा के प्रति एक संबंध परख दृष्टिकोण" पुस्तक में इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं[5] और देखभाल को नैतिकता का आधार बताते हुए देखभाल कर्ता और देखभाल पाने वाले के बीच संबंधों पर प्रकाश डाला है[3]।

3. **शोध प्रश्न–**

3.1 देखभाल की शिक्षा व उसकी प्रमुख अवधारणायें क्या है?
3.2 क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्कूली शिक्षा(ईसीसीई) में देखभाल की शिक्षा की बात करती है?

4. **उद्देश्य–**

4.1 देखभाल की शिक्षा का विस्तार से अध्ययन करना।
4.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांतों व भाग–1 में वर्णित ईसीसीई का विस्तृत अध्ययन करना।

5. **शोध विधि–** प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक प्रकार का शोध है जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एव ंकेयर एजुकेशन से सम्बन्धित विषय वस्तु व शोध पत्रों का विश्लेष्णात्मक व समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

6. **उद्देश्य–**1

6.1 **पृष्ठभूमि–** देखभाल की शिक्षा का संप्रत्यय नेल नोडिंग्स की देन है जो देखभाल की नैतिकता सिद्धांत पर आधारित है। वस्तुतः केरोल गिलगिन देखभाल की नैतिकता सिद्धांत की प्रधान प्रर्वतक हैं जो उन्होने कॉलबर्ग के नैतिक सिद्धांत के विरोध में प्रतिपादित किया गिलीगंन ने 1982 में प्रकाशित अपनी पुस्तक इन ए डिफरेंट वॉइस में नैतिकता का स्त्रीवादी पक्ष उजागर किया जिसमें उन्होंने बताया कि नैतिकता के प्रति स्त्रियों का दृष्टिकोण पुरुषों से भिन्न है पुरुष जहां नैतिकता को अधिकारों कानून और सार्वभौमिक रूप से लागू सिद्धांत के रूप में देखते हैं वही स्त्रियां नैतिकता को रिश्तो, करुणा व दूसरों के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखती हैं।[7] गिलिगन के इसी विचार को नेल नोडिंग्स ने आगे बढ़ाते हुए शिक्षा में प्रयोग किया।
6.2 **देखभाल की शिक्षा (केयर एजुकेशन) का अर्थ–** देखभाल की शिक्षा, एक संबंध केंद्रित शिक्षा है जिसका प्रारंभ घर से होता है[4] किंतु नोडिंग इसे घर से विद्यालय, समाज, समुदाय, फिर देश व विदेश तक लाने की आवश्यकता बताती है। नोडिंग[8] नैतिक विकास का आधार देखभाल को ही बताती है। देखभाल के द्वारा ही छात्रों में सही व गलत की समझ बाल्यकाल में ही विकसित करके नैतिक निर्णय लेने में उन्हें सक्षम बनाया जा सकता है। नोडिंग्स इसके दो प्रमुख घटक बताती हैं– **देखभाल कर्ता और देखभाल प्राप्त कर्ता**[3]। देखभाल की शिक्षा इन दोनों के बीच की अंतः क्रिया और उससे विकसित होने वाले संबंधों की बात करती है। देखभाल की शिक्षा एक पारस्परिक क्रिया या अनुभूति है जो बालक के सामाजिक भावात्मक नैतिक विकास में सहायक है।
6.3 **देखभाल की शिक्षा के चरण–** 1–मॉडलिंग 2–डायलॉग(वार्ता) 3–प्रैक्टिस (अभ्यास) 4–कन्फर्मेशन (पुष्टिकरण)
6.4 **मॉडलिंग–** का तात्पर्य है की देखभाल करने की क्षमता प्रदर्शित करने के अवसरों का लाभ उठाना छात्र दूसरों के द्वारा होने वाली देखभाल को देखकर उसका अनुसरण करें।
6.5 **वार्ता–** वार्ता का तात्पर्य है खुली बातचीत। जिसके द्वारा प्रतिभागियों को यह पता नहीं होता कि इसका अंत कैसे होगा इसमें दोनों बोलते हैं और दोनों ध्यान से सुनते हैं।
6.6 **अभ्यास–** देखभाल करने की क्षमता विकसित करने के लिए नियमित रूप से शिक्षक द्वारा देखभाल संबंधी गतिविधियां या क्रियाएं कराई जाए और छात्र उनमें पूर्णता से प्रतिभागिता करें।
6.7 **पुष्टिकरण–** पुष्टिकरण का यहाँ पर तात्पर्य है अपने कार्यों के लिए सर्वोत्तम संभव उद्देश्य निर्धारित करना व उन पर काम करना। यह देखभाल किए जाने वाले व्यक्ति और देखभाल करने वाले के बीच के संबंध पर निर्भर करती है।

7. **देखभाल की शिक्षा की विशेषताएं–**

7.1 यह भावना आधारित है अर्थात इसमें सहानुभूति, तदनुभूति जैसी भावनाओं के विकास पर महत्व दिया गया है।
7.2 व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा।
7.3 देखभाल आधारित छात्र शिक्षक संबंध।
7.4 निर्णय क्षमता का विकास।
7.5 नैतिक व सामाजिक मूल्यों का विकास।
7.6 ग्रहणशीलता ।

7.7 संबंधोंन्मुख उपागम।

उद्देश्य–2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जो भारतीय परम्पराओं को आधार बनाकर शिक्षा के पुर्नगठन के लिए तत्पर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट कहा गया है कि इस शिक्षा नीति का उद्देश्य अच्छे इंसानो का विकास करना है। जिनमें करुणा, सहानुभूति, लचीलापन, साहस, कल्पनाशीलता, वैज्ञानिक चिंतन, तार्किक चिंतन व नैतिक मूल्य विद्यमान हों[1] साथ ही यह भी कहा गया कि अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जहाँ प्रत्येक छात्र का स्वागत हो और उसकी देखभाल की जाये जहाँ एक सुरक्षित प्रेरणादायक वातावरण हो।

8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कुछ आधारभूत सिद्धांत–

- प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृती, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास।
- लचीलापन
- नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य
- जीवन कौशल
- शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है[1]।

9. **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा सीखने की नींव–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग–1 में वर्णित ईसीसीई के अंतरगत बताया गया कि बालक के मस्तिष्क का 85% विकास 6 वर्ष की अवस्था तक हो जाता है[1]। इसलिये इस समय बच्चों को ऐसे अनुभव प्रदान करने चाहिये जो उन पर अमिट छाप छोड़े। ईसीसीई में मुख्यतः लचीली व बहुआयामी शिक्षा की बात की गई है जिसमें ध्यानदेने योग्य बात यह है कि अक्षर, भाषा,संख्या ज्ञान के साथ ही सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, आपसी सहयोग, अच्छे व्यवहार, समूह में कार्य करने व नैतिकता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इसका उद्देश्य छात्र का सामाजिक–संवेगात्मक–नैतिक विकास करना है।

10. **समान बिंदु–** इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत कुछ ऐसे सिद्धांत वर्णित हैं जो देखभाल शिक्षा का आधार हैं जैसे–**नैतिक व मानवीय मूल्य, सहानुभूति, जीवन कौशल व लचीला पाठ्यक्रम** । इसके अतिरिक्त कुछ और बिंदु हैं जहाँ दोनो में एकरूपता दिखाई देती है–

10.1 **शिक्षक–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित शिक्षक देखभाल शिक्षा के शिक्षक की ही भांति है क्योंकि ईसीसीई शिक्षक भी विशेष रूप से प्रारंभिक बाल विकास व देखभाल में प्रशिक्षित होगा[1] और देखभाल शिक्षा का शिक्षक भी देखभाल कर्ता के रूप में प्रशिक्षित होगा जिसकी जिम्मेदारी संवेदनशील वयस्क तैयार करने की है जो समाज में अपना योगदान दे सके।

10.2 **शिक्षार्थी–** शिक्षार्थी देखभाल प्राप्तकर्ता के रूप में होगा जो शिक्षक से देखभाल करना सीखेगा एवं वह पारस्परिक अनुक्रियाओं द्वारा संबंधों के महत्व को समझ सकेगा। नई शिक्षा नीति में भी प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत छात्र को एक ऐसे वातावरण प्रदान किया जाना है जिसमें वह अपने शिक्षकों द्वारा पारस्परिक सहयोग को सीख सके[1] व सामाजिक– संवेगात्मक–नैतिक विकास को प्राप्त कर सके।

10.3 **विद्यालय–** देखभाल शिक्षा में विद्यालय घर की तरह ही होना चाहिए क्योंकि नॉर्डिंग्स डीवी से प्रभावित थी और डीवी का कहना है कि विद्यालय एक लघु समाज के रूप में है हम सब जानते हैं कि समाज की शुरुआत घर से होती है और नल लोडिंग भी देखभाल की शिक्षा का प्रारंभ घर से मानती हैं लेकिन उसे विद्यालय तक ले जाने की बात करती है तो विद्यालय एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ पर बच्चा अपनी बात रखने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र हो वह सुरक्षित महसूस करें वह जहाँ पर उसकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और रुचियों का ध्यान दिया जाए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बताई गई बालवाड़ी एवं आंगनबाड़ी इसी प्रकार के विद्यालय हैं[1] जहाँ पर बच्चों को पूरी घर जैसी देखभाल वह उनके पूर्ण विकास पर काम किया जाएगा।[9]

10.4 **लचीला पाठ्यक्रम–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाग–1 के अंतर्गत लचीला पाठ्यक्रम की बात की गई है ताकि शिक्षार्थियों में उनके सीखने के तौर तरीकों और अपनी प्रतिभा और रुचियां के अनुसार जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो सकें[1]। लचीलापन, देख भाल शिक्षा का भी एक प्रमुख सिद्धांत है। प्रारंभिक बाल्यावस्था में शिक्षक को इस परिप्रेक्ष्य में पाठयक्रम के लचीलेपन की स्वतंत्रता दी गयी है क्योंकि यह आधारभूत अवस्था होती है जिसमें बालक सब कुछ देखकर सीख रहा होता है तो अगर शिक्षक पाठ्यक्रम में बंधा हुआ नहीं होगा तो छात्रों की रुचि व व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार यह सुनिश्चित कर पायेगा कि उन्हें कैसी देखभाल की आवश्यकता है जिसके द्वारा उनका सामाजिक–भावनात्मक– नैतिक विकास ज्यादा से ज्यादा किया जा सके उसके अनुसार शिक्षण उन गतिविधियों व क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए स्वतंत्र हो।[10]

11. देखभाल शिक्षा की क्रियाएं– कुछ सुझाव–

- शिक्षक का देखभाल पूर्ण व्यवहार ।
- समूह में बैठकर वार्तालाप जो की देखभाल केंद्रित हो ।

- देखभाल आधारित कहानी सुनाना व सुनना ।
- बच्चों से पूछना कि वह अपने बुजुर्गों दादा–दादी, नाना–नानी एवं अन्य बड़े लोगों की प्रतिदिन कैसे देखभाल करते हैं?
- पौधों और वातावरण की देखभाल से संबंधित वार्तालाप।
- प्रकृति व वातावरण देखभाल से संबंधित कहानियां बच्चों को सुनाना व उनका रोल प्ले करवाना ।
- बच्चों से प्राकृतिक देख भाल आधारित कहानी सुनने व सीखने के लिए प्रेरित करना ।
- हफ्ते में दो दिन बच्चों को प्राकृतिक भ्रमण (जो कि विद्यालय परिसर या आसपास ही हो) के लिए ले जाना ।
- पशुओं की देखभाल संबंधी वार्तालाप व कहानियों का आदान–प्रदान।
- सामूहिक कार्यों को प्रोत्साहन ।
- सामूहिक खेलों को प्रोत्साहन ।
- सहपाठी समूह की देखभाल संबंधी क्रियाओं में बच्चों को संलग्न करना।
- छोटे–छोटे निर्णय लेने संबंधी क्रियाओं का आयोजन।

11. **निष्कर्ष**– देखभाल की शिक्षा वर्तमान मोबाइल युग में बालक के पूर्ण विकास के लिए एक अहम प्रयास साबित हो सकता है क्योंकि इसमें शिक्षा के उस पक्ष पर ज्यादा जोर दिया गया है जो अब तक उपेक्षित रहा है नेल ने विद्यालयी शिक्षा में देखभाल की शिक्षा के सुझाव द्वारा बालक के सामाजिक–भावात्मक–नैतिक विकास पर बल दिया है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों में से एक है। उपर्युक्त वर्णित देखभाल आधारित क्रियाओं द्वारा छात्र के भावात्मक पक्ष को बाल्यकाल में ही मजबूत किया जा सकता है जो आगे चलकर एक पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित प्रारंभिक बाल्यकाल देखभाल और शिक्षा लगभग लगभग वही सुझाव प्रस्तुत कर रही है जो देखभाल की शिक्षा करती है अतः देखभाल की शिक्षा की कुछ विशेषताओं को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा में शामिल करके एक उपयोगी पाठ्यक्रम विकसित किया जा सकता है।

References

1. Ministery of Education, Government of India (2020) National Education Policy2020. Retrieved from-https://www-education-gov-in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0-pdf
2. Adhikari, A., Saha, B., & Sen, S. (2023) Nel Noddings' theory of care and its ethical components. International Research Journal of Education and Technology, 5(8), 198-206.
3. Broström, S. (2006, December) Care and education: Towards a new paradigm in early childhood education. In Child and youth care forum (Vol. 35, No. 5, pp. 391-409). New York: Kluwer Academic Publishers-Plenum Publishers
4. https://share.google/sDr23jw6r25AmAY4Q
5. Noddings, N. (2013) Caring: A relational approach to ethics and moral education. University of California Press.
6. infed.org https://share.google/cpYaMoUH5nsmwfpcL
7. Noddings, N. (2002) Starting at home: Caring and social policy. Univ of California Press.
8. Noddings, N. (2008) Caring and moral education. Handbook of moral and character education, 161-174.
9. Noddings, N. (2015) The challenge to care in schools. teachers college press.
10. Mondal, A., & Mondal, P. (2025) Early Childhood Care and Education (ECCE) in India in the light of national education policy 2020: a reality check. Education 3-13, 1–15. https://doi.org/10.1080/03004279.2025.2524484.